मौलिक विकल्पों की खोज

मुख्य पहलू और सिद्धांत

KALPAVRIKSH

कल्पवृक्ष

प्रकाशन
कल्पवृक्ष, अपार्टमेंट ५, श्री दत्त कृपा,
९०८ डेक्कन जिमखाना, पुणे ४११००४.
www.kalpavriksh.org
www.vikalpsangam.org

२०१७

लेख: अशीष कोठारी द्वारा लिखित लेख पर आधारित, जो काउन्टर करन्ट्स के नवम्बर २०१६ अंक मे छपा था; इसमे लेन्का टोपिन्कोवा, श्रृष्टी बाजपाइ, अरण्य पाठक ब्रूम, पवनी पान्डे, सुजाता पद्मनाभन, अनुराधा अर्जुनवाडकर, व अंजिता केवी ने काम किया है या टिप्पणी दी है।

हिन्दी अनुवाद: निधि अगरवाल (अशीष कोठारी के साथ)

Funded by: Oxfam India

डिज़ाइन और मुद्रण: मुद्रा, पुणे

तस्वीर: अशीष कोठारी (पृष्ठ ८ के सिवाय, जो सीजीनेटस्वरा के द्वारा; तथा प्रष्ट १३ उपरी तस्वीर के सिवाय, जो विजय जरधारी के द्वारा)

ISBN: 978-81-87945-77-2

This work is licensed under Creative Commons license Attribution-Non Commercial-ShareAlike 4.0 International (cc BY-NC-SA 4.0)
http://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0

इस पुस्तिका का कोइ भी अन्श इस्तेमाल / कॉपी किया जा सकता है, गैर–व्यवसायिक उद्देश्य के लिये व इसके लेखक तथा प्रकाशक का नाम देते हुये।

मुखप्रष्ट तस्वीर:
नदीमिदोद्दी विनोदम्मा, उन सैंकडो महिलाओं मे से एक जो तेलन्गाना के डेक्कन डेवेलपमेन्ट सोसायटी मे कार्यरत है और खाद्य के अभाव, जातिवाद व लिन्गभेद की समस्याओं से जूझकर अन्न स्वराज, जैविक विवधता व पारिस्थिकीय संरक्षण, सूखी जमीन मे उच्च उत्पादन वाली खेती, व महिला सशक्तिकरण, सम्मान और स्वावलम्बन की ओर बढी हैं।

मौलिक विकल्पों की खोज : मुख्य पहलू और सिद्धांत

एक सतत और न्यायसंगत दुनिया बनाने के लिए क्या हम सामूहिक रूप से आदर्शों और रास्तों की खोज कर सकते हैं? ऐसे ढांचे और दृष्टिकोण किस प्रकार पहले से मौजूद विचारों, वैश्विक नज़रियों और संस्कृतियों, तथा ज़मीनी स्तर पर किए जा रहे पुराने और नए कामों को आगे ले जा सकते हैं? वर्तमान में हावी आर्थिक और राजनीतिक प्रणालियों, जिनके कारण विश्व पारिस्थितिकीय या पर्यावरणीय विनाश और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं तथा निराशा की गहराईयों की कगार पर खड़ी है, के मौलिक स्वरूप से उन्हें कैसे अलग बनाया जाए? क्या वे सामाजिक तनाव और अशांति, प्रतिगामी रूढ़िवादी ताकतों के फिर से प्रबल होने, और पर्यावरणीय विनाश के कारण पैदा हो रही आपदाओं के इस माहौल में आशा की कोई किरण दिखा सकते हैं?

लदाख विकल्प सन्गम के सदस्य साबू गांव मे, लेह के पास, जुलाइ २०१५

यह लेख ऐसी एक प्रक्रिया की दिशा में कुछ विचारों को पेश करने का प्रयास है, जिसे चर्चा और नियोजन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से लिखा गया है। यह विकल्प संगम नामक प्रक्रिया पर आधारित है, जो कि जीवन के विभिन्न पहलुओं पर हावी विकास और प्रशासन के प्ररूपों के विकल्पों पर काम कर रहे समूहों और लोगों को जोड़ने का एक मंच है (देखें http://kalpavriksh.org/index.php/alternatives/alternatives-knowledge-center/353-vikalpsangam-coverage; इसके अतिरिक्त देखें डागा २०१४, कोठारी २०१५, थकेकरा २०१५)। इसका प्रमुख काम है क्षेत्रीय स्तर पर और विशिष्ट विषयों पर पूरे भारत में गोष्ठियां करना;[१] इसके अतिरिक्त एक वैबसाइट है जहां देश भर से इकट्ठी की गई कहानियां और दृष्टिकोण पेश किए गए हैं (www.vikalpsangam.org या www.alternativesindia.org), एक मोबाइल पोस्टर प्रदर्शनी है (जिसे एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया गया है, कल्पवृक्ष २०१५), और देश भर में किए जा रहे प्रयासों के वीडियो बनाए गए हैं।

इन संगमों में लोग अपने अनुभव और विचार बांटते हैं, जो उनके द्वारा किए गए प्रयासों और सोच से उभर कर आते हैं : सतत कृषि प्रक्रियाएं और चारागाही, अक्षय ऊर्जा, विकेन्द्रीकृत प्रशासन, सामुदायिक स्वास्थ्य, शिल्प और कला का पुनर्जीवन, विविध यौनिकताएं, अपंगता के साथ जी रहे लोगों को शामिल करना, वैकल्पिक सीख और शिक्षा, समुदाय-आधारित संरक्षण, विकेन्द्रीकृत जल प्रबंधन, शहरी सततता, जेन्डर और जाति समानता, आदि। जो लोग देश में कुछ अद्भुत प्रयास चला रहे हैं, या सोच रहे हैं, वे यहां साथ आते हैं और अपने काम के अनुभव बांटते हैं।

लेकिन, केवल व्यावहारिक अनुभव बांटने के अलावा, विकल्प संगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण परिणाम रहा है परिवर्तनकारी विकल्पों की रूपरेखा तैयार करना। यह रूपरेखा (जिसे इसके आगे रूपरेखा ही कहा जाएगा), लगातार विकसित हो रही है, हर संगम में चर्चा के माध्यम से।[२] ऊपर सूचित कार्यक्षेत्रों में काम कर रहे सैंकड़ों लोगों ने इस रूपरेखा के विभिन्न पहलुओं पर काम किया है (हर संगम के लिए संबद्ध भाषा में उपलब्ध कराया जाता है, जो कि अब तक हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगु में अनुवाद किया जा चुका है)। यह लेख इस रूपरेखा के प्रमुख तत्वों को प्रस्तुत करता है, जिससे कि और व्यापक स्तर पर टिप्पणियां और सुझाव प्राप्त हों, जिन्हें इसको और विकसित करने, और संभवत: भारत के भविष्य पर 'जनता' की योजना बनाने के लिए उपयोग किया जा सके।

विकल्प संगम प्रक्रिया का सचेत प्रयास है कि यहां पर सामाजिक, आर्थिक, पारिस्थितिकीय समस्याओं या उनके मूल कारणों पर ज्यादा चर्चा न की जाए; हमारा मानना है कि इन विषयों पर अन्य मंचों पर व्यापक चर्चा होती है, और यह कि संगम में भाग लेने वाले लोगों के बीच इस संदर्भ की एक मूल साझा समझ है। यदि कुछ पंक्तियों में कहा जाए, तो यह रूपरेखा पारिस्थितिकीय असततता, असमानता और अन्याय, और जीवन व आजीविकाओं में हानि के ढांचागत कारणों को संज्ञान में लेती है, जिसमें शामिल है : ''केन्द्रीकृत और श्रेणीबद्ध राजकीय तंत्र, पूंजिवादी कॉर्पोरेट नियंत्रण, पितृसत्ता और अन्य प्रकार की सामाजिक तथा सांस्कृतिक असमानताएं (जिसमें जातिवाद शामिल है), बाकी प्रकृति और अपने आध्यात्मिक स्वरूप से अलगाव, और जानकारी तथा तकनीकों पर अलोकतांत्रिक नियंत्रण''। शायद इससे हर कोई सहमत न हो, लेकिन संगम प्रक्रिया में भाग लेने वाले लोगों ने यह माना है कि हम समस्या की विशिष्टताओं के विषय में कहीं और चर्चा कर सकते हैं, जबकि यहां पर हम ''आगे के लिए रास्तों और दृष्टिकोण'' पर ज़ोर देंगे, जहां हम मानते हैं कि हम सब ''एक संकट की स्थिति होने की भावना'' पर व्यापक रूप से सहमत हैं।

नीचे दिए जा रहे हैं (क) विकल्प के प्रमुख स्तंभ या तत्व, (ख) विभिन्न कार्यक्षेत्रों में विकल्पों के कुछ उदाहरण, (ग) इन प्रयासों से उभरते हुए प्रमुख मूल्य या सिद्धांत, (घ) इस आधार पर परिवर्तन प्राप्त करने की रणनीतियां, और (च) इस दिशा में आगे खोज करने के लिए प्रश्न।

◈◈

विकल्प क्या होता है?

संगम प्रक्रिया में जो सूत्र चला आ रहा है, वह है विकल्प किन तत्वों का बना है, इसकी खोज। यह मानते हुए कि हम ऊपर सूचित की गई समस्याओं (और उनके मूल कारणों) से हटकर रास्तों की खोज कर रहे हैं, यह रूपरेखा कहती है कि ''विकल्प व्यावहारिक गतिविधियां, नीतियां, प्रक्रियाएं, तकनीकें, और अवधारणाएं/रूपरेखाएं हो सकते हैं। उनका पालन किया जा सकता है या फिर समुदायों, सरकारों, संस्थाओं, लोगों, और सामाजिक उद्योगों आदि द्वारा प्रस्तावित/प्रचारित किया जा सकता है। विकल्प पीछे से चली आ रही प्रक्रियाओं को चालू रखना भी हो सकता है, जिन पर फिर से ज़ोर दिया जा रहा हो या उन में वर्तमान समय के अनुसार बदलाव किए जाएं, या फिर आधुनिक प्रक्रियाएं; यहां ध्यान देना ज़रूरी है कि इस शब्द का मतलब यह नहीं है कि हमेशा कुछ नया या 'हाशिए' का ही होना चाहिए, लेकिन यह है कि यह मुख्यधारा या हावी प्रणालियों के विपरीत होता है।''

यह रूपरेखा प्रस्तावित करती है कि विकल्प नीचे दिए गए प्रमुख पहलुओं या स्तंभों पर आधारस्थित हैं, जो कि आपस में जुड़े हुए हैं और परस्पर व्याप्त हैं[३] :

१. **पारिस्थितिकीय अखंडता और लचीलापन,** जिसमें शामिल है प्रकृति तथा प्राकृतिक विविधता का संरक्षण, पारिस्थितिकीय भूमिकाओं को बनाए रखना, पारिस्थितिकीय सीमाओं का सम्मान (स्थानीय और वैश्विक), और हर प्रकार के मानवीय कृत्यों में पारिस्थितिकीय नैतिकता बनाए रखना।

२. **सामाजिक कल्याण और न्याय,** जिसमें शामिल है जीवन की परिपूर्ति (शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, और आध्यात्मिक रूप से), समुदायों और लोगों के बीच तुल्यता, सांप्रदायिक और जातीय सद्भाव; और धर्म, लिंग, जाति, वर्ग, वंश, क्षमता, तथा अन्य पहलुओं में हर प्रकार की श्रेणीबद्धता, असमानता तथा विभाजन को मिटाना।

३. **प्रत्यक्ष और प्रतिनिधि लोकतंत्र,** जहां निर्णय लेने की प्रक्रिया ऐसी जगहों से शुरू हो, जहां हर व्यक्ति सार्थक रूप से भागीदारी कर सके, और इस स्तर से प्रशासन के ऊपरी स्तरों तक निर्णयों को विकसित किया जाए, जिनको लागू करने वाली संस्थाएं नीचे के स्तरों की ओर जवाबदार हों; और यह सभी प्रक्रियाएं वर्तमान में हाशिए के समुदायों की ज़रूरतों और अधिकारों के प्रति संवेदनशील हों।

४. **आर्थिक लोकतंत्र,** जहां स्थानीय समुदाय और लोगों का उत्पादन, वितरण, विनियमन, और बाज़ार के साधनों पर नियंत्रण हो, जो कि मूल ज़रूरतों के स्थानीयकरण व स्वावलम्बन के सिद्धांत पर आधारित हो और उनका व्यापार इस पर आधारित हो; इसमें एक केन्द्रीय भूमिका रहेगी निजी संपत्ति को बदल कर संचायती संपत्ति में तब्दील करना।

५. **सांस्कृतिक[४] विविधता और ज्ञान लोकतंत्र,** जिसमें संचायती संपत्ति पर कई परस्पर ज्ञान प्रणालियां मौजूद हों, जीवनशैलियों, विचारों और विचारधाराओं की विविधता का सम्मान, तथा रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा दिया जाए।

भुज (कच्छ) मे गरीब परिवारों के लिये आसानी से बनने वाला योग्य आवास

इन सब के आधार पर रूपरेखा प्रस्तावित करती है कि ''मानवीय कृत्यों का केन्द्र न तो राज्य है और न ही कॉरपोरेशन, बल्कि समुदाय है, एक स्व-परिभाषित लोगों का समूह जिन्हें जोड़ने वाला एक साझा सामाजिक उद्देश्य हो। समुदाय के कई स्वरूप हो सकते हैं, एक पौराणिक गांव से लेकर एक शहरी क्षेत्र, या किसी संस्थान के विद्यार्थियों का समूह, यहां तक कि साझी रुचियां रखने वाले लोगों के आभासी समूह भी।''

यह तो तय है कि विकल्प संगम प्रक्रिया के भागीदार समझते हैं कि विकल्पों की वास्तविक खोज में शायद ऊपर दिए गए सभी पहलू किसी भी एक प्रक्रिया या पहल या जगह पर पूरे न हो सकें। इसलिए, एक सामान्य नियम के रूप में, वे प्रस्तावित करते हैं कि यदि कोई प्रयास ऊपर के पांच में से कम-से-कम दो परिणाम प्राप्त करने में मदद करता है, और गंभीर रूप से और जानबूझ कर किसी अन्य पहलू का उल्लंघन नहीं करता है, और शायद उन्हें भी प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है, तो उसे विकल्प के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह किसी बाहरी व्यक्ति के निर्णय पर निर्भर नहीं करता, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से संबंधित लोग अपने बीच यह समझ बनाने की कोशिश करते हैं कि वे बदलाव की प्रक्रिया में कहां खड़े हैं, और उन्हें क्या करने की ज़रूरत है। यह रूपरेखा उन्हें ऐसे उदाहरण देती है कि मानवीय प्रयासों के विभिन्न कार्यक्षेत्रों में किस प्रकार की गतिविधियां और प्रक्रियाएं विकल्प हो सकती हैं, और कौन सी नहीं; इसे संक्षिप्त रूप में नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

◈◈

विभिन्न कार्यक्षेत्रों के विकल्प क्या हैं?

इस रूपरेखा में १२ कार्यक्षेत्रों के लिए ऐसे संकेतक दिए गए हैं जो बताते हैं कि किस प्रकार के प्रयासों को विकल्प कहा जा सकता है। इसमें ऐसे प्रयासों के वास्तविक उदाहरण जोड़े हैं, जो ज़्यादातर विकल्प संगम की वैबसाइट से लिए गए हैं। [५]

समाज, संस्कृति और शांति

इसमे शामिल हैं – मानव जीवन के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को उजागर करने वाले प्रयास, जैसे कि भारत भर भाषाओं, कला, तथा शिल्पकारिता में विशाल विविधता, जाति, वर्ग, जेन्डर, जातीयता, शिक्षा, नस्ल, धर्म, और स्थान (शहरी–ग्रामीण, नज़दीक–दूर) की असमानताएं दूर करना; विभिन्न जातीयता, धर्म और संस्कृति के समुदायों के बीच सारसमता बनाना; उन लोगों के जीवन को गरिमापूर्ण बनाना जो आज के समय में पीड़ित हैं, शोषित हैं, या हाशिए पर जी रहे हैं, जिनमें शामिल हैं 'विक्लांग' या नि:शक्तजन और यौनिक अल्पसंख्यक; नैतिक जीवन और सोच को बढ़ावा देना; और आध्यात्मिक जागृति के अवसर पैदा करना।

इनके कुछ उदाहरण जो मन में आते हैं, वे हैं : भाषाओं की विविधता को बनाए रखने और उसके दस्तावेज़ीकरण के क्षेत्र में किया गया भाषा संस्था का काम (http://www.vikalpsangam.org/article/the-language-of-diversity/) पश्चिम बंगाल में लांडेसा संगठन के सहयोग से युवतियों को उनके संपत्ति के अधिकार के बारे में शिक्षा देना, और उन्हें खाद्य सुरक्षा के लिए कौशल सिखाना ((http://www.vikalpsangam.org/article/how-to-teach-a-girl-to-farm-and-transform-her-life-inthe-process/#.VgZ7WPntmko), और महाराष्ट्र में आदिवासियों के जगली आहार ज्ञान व विविधता को पुनर्जीवन देने और सतत बनाने का समुदाय की महिला समितियों व कल्वव्क्ष का प्रयास (http://vikalpsangam.org/article/food-fest-to-revive-tribal-cuisine/#.Vic-wH7hDIU व http://vikalpsangam.org/article/wild-foods-festival-yum/#.Wc4tgdjhXIU)। नीचे दिए गए अन्य उदाहरण भी शिल्पकला को आजीविका के रूप में बनाए रखने, और लिंग तथा जाति असमानताओं को सतत कृषि के माध्यम से हल करने से संबंधित हैं।

यह रूपरेखा एक चेतावनी भी देती है, जो कि आज के बढ़ते हुए राज्य का समर्थन–प्राप्त कट्टरपंथी माहौल के लिए महत्वपूर्ण है : कि किसी एक पहलू पर जो प्रयास वैकल्पिक नज़र आते हैं, जैसे कि संरक्षण, या आधुनिकता के पुरजोर हमले के सामने उचित परंपराओं को बनाए रखना, वे यदि जाति, संप्रदाय, लैंगिक, या अन्य प्रकार की मंशाओं और पूर्वाग्रहों से लिप्त हैं, या सामाजिक अन्याय और अतुल्यता से जुड़े हैं, या जो राष्ट्रीयता के ऐसे संकीर्ण नज़रिए से जुड़े हैं जो अन्य संस्कृतियों और लोगों के प्रति असहिष्णुता की भावना को बढ़ावा देते हैं, तो वे वैकल्पिक प्रयास नहीं माने जाएंगे।

सामुहिक जंगल से सतत प्रणाली काटी गइ बांस से बनी वस्तु, करोडों लोगों के लिये आजीविका का स्त्रोत बन सकती है

वैकल्पिक आर्थिक व्यवस्थाएं और तकनीकें

इसमे शामिल हैं. जो प्रयास वर्तमान में हावी नव–उदारवादी या राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था तथा विकास के पीछे दिए जाने वाले तर्कों के विकल्प बनाने में मदद करते हैं, जैसे कि मूल ज़रूरतों का स्थानीयकरण और विकेन्द्रीकरण, जिससे कि विविध आजीविकाओं, उत्पादक व उपभोक्ता समूहों, स्थानीय मुद्राओं और व्यापार, गैर–वित्तीय तथा तुल्य विनियमन और उपहार अर्थव्यवस्था, पारिस्थितिकीय सिद्धांतों पर आधारित उत्पादन, पारिस्थितिकीय और सांस्कृतिक अखंडता बनाए रखने वाली नवीन तकनीकें, और कल्याण के जी.डी. पी. आधारित संकेतकों से हट कर गुणात्मक, मानवीय स्तर के संकेतकों के उपयोग के माध्यम से आत्म–निर्भरता, सम्मान और सहयोग को बढ़ावा मिलता हो।

इसके जो उदाहरण सामने आते हैं, उनमें शामिल हैं : तमिल नाडु के ग्राम कुटुंबकम के पूर्व सरपंच, इलांगो रंगासामी द्वारा स्थानीय उत्पादन और क्षेत्रीय आत्म–निर्भर अर्थव्यवस्था स्थापित करने के प्रयास (http://www.vikalpsangam.org/static/media/uploads/Resources/kuthumbakkam_1st_july.pdf), चेन्नई की औरतों का नम्मभूमि नामक व्यापार उध्योग द्वारा प्लास्टिक हटा कर पर्यावरण–अनुकूल उत्पादनों का उपयोग करने का प्रयास, जैसे कि ताड़ के पत्तों से बनी प्लेटें, कपड़े के झोले, कागज़ और जूट के पुनईस्तेमाल (रीसाइकिल) किए गए उत्पाद (http://vikalpsangam.org/article/two-womenengage-in-battle-against-plastic/), किसानों, मछुआरों, चरवाहों, शिल्पकारों आदि के कई दर्जनों उत्पादक कंपनियां, जैसे कि टिमबक्टू कलेक्टिव द्वारा स्थापित की गइ धरणी (http://vikalpsangam.org/article/very-much-on-the-map-the-timbaktu-revolution/), और गूंज संस्था के कपड़ों के उपयोग के माध्यम से समानांतर नक़दहीन अर्थव्यवस्था स्थापित करने का प्रयास (http://vikalpsangam.org/article/cloth-as-currency-how-goonj-is-creating-a-parallel-cashlesseconomy/#.Vgoyvvntmko)।

यहां भी रूपरेखा संभावित विकल्पों के संदर्भ में सचेत करती है : ''सतही और गलत समाधान, जैसे कि सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के मुख्यत: बाज़ार या तकनीक आधारित हल ढूंढना, या आम तौर पर 'हरित विकास'/ 'हरित पूंजिवाद' जैसी प्रणालियों को अपनाना, जो कि पहले से चली आ रही व्यवस्था के साथ केवल थोड़ी–बहुत छेड़छाड़ भर ही करते हैं'' – ये विकल्पों का हिस्सा नहीं बन सकते।

धरणी उतपादक कम्पनी द्वारा बनाए सतत खेती आधारित पदार्थ, टिम्बक्टू कलेक्टिव, आंध्र प्रदेश

आजीविकाएं

विकल्प की खोज के साथ ही जुड़ा हुआ है स्थानीय अर्थव्यवस्था का विषय, जिसमें शामिल हैं ऐसे प्रयास जो संतोषपूर्ण, गरिमापूर्ण, पारिस्थितिकीय रूप से सतत आजीविकाएं और रोज़गार उपलब्ध करा सकें। यह ऐसे प्रयास भी हो सकते हैं जो पहले से चले आ रही परंपरागत व्यवसायों को जारी रखने में मदद करते हों, जिन्हें समुदाय चलाना चाहते हैं, जैसे कि प्राथमिक अर्थव्यवस्था के अंतर्गत कृषि, चरवाही, घुमंतु व्यवसाय, वानिकी, मछली व्यवसाय, शिल्पकारिता आदि; या फिर वे उत्पादन और सेवाएं देने से जुड़े रोज़गार, जो कि पारिस्थितिकीय रूप से सतत और गरिमापूर्ण हों।

ऐसे व्यवसायों के उदाहरणों में से कुछ हैं : तेलंगाना में डैक्कन डैवलपमेंट सोसायटी की दलित महिला सदस्यों द्वारा सतत, जैविक कृषि को पुनर्जीवित करना (http://www.vikalpsangam.org/article/

हतकर्घा की बुनाइ कच्छ मे पुनर्जीवित हुइ है, खमीर जैसे संगठन की सहायता से, व पारम्परिक कला और पर्याप्त आजीविका प्रदान करती है

cultivating-biodiversity-peasant-women-inindia/#.VgTVlMvtmko) या आंध्र प्रदेश में टिम्बक्टू कलेक्टिव से जुड़े किसानों के प्रयास (http://vikalpsangam.org/article/very-much-on-the-map-the-timbaktu-revolution/); कच्छ में सहजीवन संस्था द्वारा सहयोग प्राप्त मालधारी चरवाहों व खमीर संगठन के सहयोग से बुनकरों के प्रयास (http://www.kalpavriksh.org/images/alternatives/CaseStudies/KachchhAlternativesReport.pdf), महाराष्ट्र में आंतरा संस्था के साथ पशुपालक समुदाय के प्रयास (http://anthra.org/index.php), और आंध्र प्रदेश में फूड सोवरेनिटी अलायंस का आदिवासी, छोटे किसान, दलित, पशुपालक व सामाजिक आंदोलनो का एकजुट काम (https://foodsovereigntyalliance.wordpress.com); झारखंड में सरकारी उपक्रम झारक्राफ्ट जिसने लगभग ३,००,००० शिल्पकार परिवारों की आजीविकाओं को बढ़ावा दिया है (http://vikalpsangam.org/article/beingthe-changejharcraft-in-jharkhand/#.Vgzzmvntmko); मल्खा कपड़े में नवोचार जिसके कारण सतत आजीविकाएं मिलने से बुनकरों और कारीगरों का सशक्तिकरण हुआ है (http://vikalpsangam.org/article/the-key-to-thehandloom-crisis/#.ViYyCH7hDIU); और पुणे में स्वक्छ संस्था के माध्यम से कचरा उठाने वाली औरतों की यूनियन व सहकारी संगठन बनाना, जिससे उन्हें काम में सुरक्षा और गरिमा मिली है (http://www.vikalpsangam.org/article/picking-abrighter-future/)।

झारखन्ड मे झारक्राफ्ट ने पारम्परिक कला–आधारित आजीविका को बढावा व गांव से पलायन को कम किया है

इसमें ऐसी पारंपरिक या आधुनिक आजीविकाएं शामिल नहीं हो सकतीं, जहां गैर–मज़दूरों के हाथ में नियंत्रण और मुनाफ़ा (आर्थिक या राजनैतिक) हो और मज़दूरों का शोषण हो; यह आज के परिवेश में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहां कई पूंजिवादी या सरकारी कारपोरेशन पर्यावरण–अनुकूल होने का दावा करती हैं, लेकिन उनके मज़दूरों से काम करवाने या मुनाफ़े को बांटने के तरीके शोषक ही रहते हैं।

बस्तियां और यातायात

इसमे शामिल हैं. लोगों के रहने वाली बस्तियों (ग्रामीण, शहरी, ग्राम–शहरी) को स्थाई वास्तुकला और आसान आश्रय प्राप्त करने, जहां तक हो सके वहां मूल ज़रूरत की चीज़ें स्थानीय स्तर पर तैयार करने, पारिस्थितिकीय पुनर्जनन, कचरे को न्यूनतम रखने और उसे दोबारा किसी काम की चीज़ बनाने, शहरी संसाधनों के उपयोग को कम करने, ज़हरीले पदार्थों को पारिस्थितिकीय रूप से सतत पदार्थों से बदलने, शहरी संचायती जगहों को बनाए रखने, विकेन्द्रीकृत, सहभागी बजट बनाने और बस्तियों के नियोजन, तथा सतत, तुल्य यातायाता के साधनों को बढ़ावा देने (खासकर, संचायती, सार्वजनिक और मोटर–रहित) के माध्यम से सतत, तुल्य, और संतोषपूर्ण तरीके से रहने, काम करने की जगहें बनाने की खोज।

ऐसे प्रयासों के उदाहरणों में शामिल है: भुज शहर में कई संस्थाओं द्वारा चलाया जा रहा 'होम्स इन द सिटी' कार्यक्रम जो खुद घर बनाने या सस्ते घर प्राप्त करके, जल स्वावलंबन, कचरा–प्रबंधन, खुली जगहों, व अन्य सेवाओं के माध्यम गरीब नागरिकों को सशक्त करता है; बंगलूरु और सेलम शहरी झीलों/जलस्रोतों को पुनर्जीवित करने के प्रयास (जैसे कि काइकोन्डराहल्ली में, देखें http://vikalpsangam.org/static/media/uploads/Resources/kaikondrahalli_lake_casestudy_harini.pdf); शहरी कृषि जैसे कि, कई शहरों में छतों पर बागवानी के प्रयास; पुणे में कागज़ काच पात्र कष्टकरी पंचायत की कचरा सहकारी समितियां और स्वच्छ यूनियन (http://swachcoop.com d http://www.kkpkp-pune.org); पुणे मे साइकल योजना मे जनता की भागिदारी (https://punecycleplan.wordpress.com) और पुणे तथा बंगलूरु में भागीदार बजटिंग प्रयास (http://www.vikalpsangam.org/article/participatory-budgeting-in-pune-a-critical-review/)।

यह रूपरेखा ध्यान दिलाती है कि संभ्रांतवादी और महंगे प्रारूप जो देखने में तो सतत लगते हैं, परंतु न वे संदर्भ के अनुकूल होते हैं और न ही लोगों के उपयोग के लिए सस्ते, वे विकल्पों का हिस्सा नहीं हो सकते।

केकेपीकेपी व स्वच्छ ने पुणे की कूडा इकट्ठा करने वाली महिलाओं को सम्मान, बेहतर कमाइ, व सामाजिक शक्ति प्रदान की है

वैकल्पिक राजनीति

इसमे शामिल है. लोक-केन्द्रित प्रशासन और निर्णय प्रणाली की दिशा में किए जा रहे प्रयास व दृष्टिकोण, जिसमें शहरी और ग्रामीण इलाकों में प्रत्यक्ष लोकतंत्र या स्वराज शामिल है, और साथ ही, इनके व्यापक संदर्भ में आपसी संबंध, वर्तमान राजनैतिक सीमाओं की दोबारा कल्पना करना जिससे कि वे पारिस्थितिकीय और सांस्कृतिक पहलुओं के अनुरूप बनें, गैर-पार्टी प्रक्रियाओं को बढ़ावा देना, सरकार और राजनैतिक पार्टियों में जवाबदारी और पारदर्शिता बढ़ाने के तरीके, और प्रगतिशील नीतिगत ढांचे।

उदाहरण हैं : मेंढा-लेखा जैसे गांवों का ३० साल पुराना इतिहास, जिन्होंने अपने सार्वजनिक संसाधनों पर पूरा नियंत्रण कर लिया है और घोषित कर दिया है कि उनके गांव के लिए वे खुद सरकार हैं (पाठक और गौड़-ब्रूम २००१; और http://www.vikalpsangam.org/article/mendha-lekha-residents-gift-all-theirfarms-to-gram-sabha/); राजस्थान की अरवरी घाटी में एक दशक तक चला क्षेत्रीय-पर्यावरण (नदी-घाटी आधारित निर्णय-प्रणाली विकसित करने का प्रयास (हसनत २००५); और सूचना के अधिकार, प्रशासन पर निगरानी रखने के लिए लोकपाल, सार्वजनिक लेखा-परीक्षण (जैसे कि राष्ट्रीय रोज़गार गारंटी कार्यक्रम के लिए किया गया), आदि।

अर्बन सेतू भुज (कच्छ) के नागरिकों को स्वशासन व सरकार को जवाबदेह बनाने के लिये सशक्त करती है

ज्ञान और मीडिया

इसमे शामिल हैं. बदलाव के लिए ज्ञान और मीडिया के उपकरणों का उपयोग करने वाले प्रयास, जो आधुनिक और पारंपरिक, औपचारिक और अनौपचारिक, तथा शहरी और ग्रामीण ज्ञान के दायरों को तुल्यात्मक रूप से इस्तेमाल करते हैं, ज्ञान को संचायती संसाधनों का हिस्सा बनाने और आसानी से उपलब्ध कराने की कोशिश करते हैं, और संचार के लिए वैकल्पिक तथा नवोचारी मीडिया का उपयोग करते हैं।

इसके उदाहरणों में शामिल हैं भुज शहर में सेतु कार्यक्रम, जो संचार (इनकी 'भुज बोले छे' नाम की वैबसाइट भी है) के माध्यम से नागरिकों और सरकार के बीच के फासले को भरने का प्रयास करता है (http://vikalpsangam.org/article/a-bridge-not-too-far/#.VgUFNMvtmko); और सी.जी.नेट स्वरा, जो मोबाइल और रेडियो तकनीकों का उपयोग करते हुए छत्तीसगढ़ के दूर-दराज़ क्षेत्रों के आदिवासी गांवों तक प्रशासन की पहुंच बढ़ाने का काम करता है (http://www.vikalpsangam.org/article/cell-phone-based-networking-system-inthe-forests/)।

डेक्कन डेवेलपमेन्ट सोसायटी द्वारा तेलन्गना मे आयोजित और्गैनिक मेदक गोष्ठी: दलित महिला सशक्तिकरण व सामाजिक-आर्थिक सम्मान की ओर बढती हुइ

पर्यावरण और पारिस्थितिकी

इसमे शामिल हैं. ऐसे प्रयास जो पारिस्थितिकीय सततता को बढ़ावा देते हैं, जैसे कि भूमि, जल और जैवविविधता का समुदाय के नेतृत्व में संरक्षण, प्रदूषण और कचरे के निपटारे या उसे न्यूनतम रखना, क्षतिग्रस्त प्राक्रितिक विस्तारों का पुनर्जनन, जीवन और जैवविविधता जिसका मनुष्य एक हिस्सा हैं, के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जागरूकता पैदा करना, और पारिस्थितिकीय नैतिकता को बढ़ावा देना।

भारत में सामुदायिक संरक्षित क्षेत्रों के हज़ारों उदाहरण हैं जहां जैव-विविधता व जंगली जीव और उनके पारिस्थिकीय इलाकों को बचाने का प्रयास जारी है

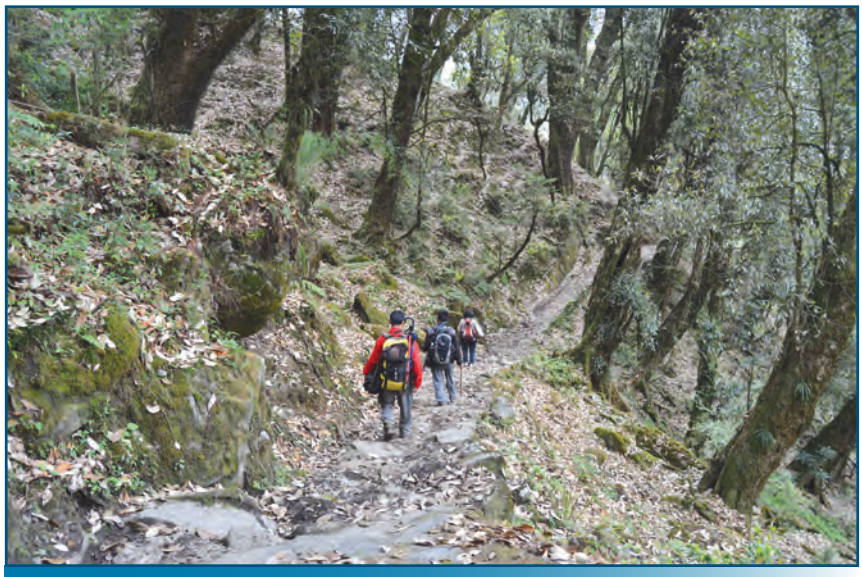

सिक्किम के खान्चेन्ड्जोन्गा राष्ट्रीय उध्यान मे कूडा-मुक्त यात्री पदपथ

(http://www.kalpavriksh.org/index.php/conservation-livelihoods1/community-conserved-areas पर उदाहरणातमक अध्ययन देखें); कई प्रयास जो बच्चों और युवाओं के लिए जैवविविधता के विषय पर स्थानीय पाठ्यक्रम और पाठ्येतर सामग्री तैयार करते हैं; ग्रामीण और शहरी पारिस्थितिकीय तंत्रों के पुनर्जीवन के प्रयास जैसे कि बंगलूरु, उदयपुर और सालेम में झीलों को पुनर्जीवित करने के अभियान; http://vikalpsangam.org/static/media/uploads/Resources/kaikondrahalli_lake_casestudy_harini.pdf; http://vikalpsangam.org/article/anil-mehta-a-man-with-amission/#.ViYCL37hDIU (http://www.vikalpsangam.org/article/life-of-piyush-21st-century-activistsalem/#.V6wEuWVkTSo); और 'शून्य कचरा' बस्तियां या पर्यटन स्थापित करने के प्रयासए जैसे कि सिक्किम में कंचनजंगा संरक्षण कमिटि का काम http://www.vikalpsangam.org/article/conserving-sacred-spaces-kanchendzonga-conservationcommittee-sikkim/)।

पारिस्थितिकीय समस्याओं के सतही समाधान, जैसे कि उत्सर्जन कम करने के बजाए, प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन के मुआवज़े के रूप में पेड़ लगाना, विकल्प नहीं हो सकता।

ऊर्जा

इसमे शामिल हैं – ऐसे प्रयास जो वर्तमान केन्द्रीकृत, पर्यावरण को क्षति पहुंचाने वाले और असतत ऊर्जा स्रोतों के विकल्प उपलब्ध कराते हों, और साथ ही, पावर ग्रिड तक तुल्य पहुंच स्थापित करते हों, जैसे कि विकेन्द्रीकृत, समुदाय-नियंत्रित अक्षय स्रोत और माइक्रो-ग्रिड, ऊर्जा तक समानांतर पहुंच, गैर-विद्युत ऊर्जा विकल्पों को बढ़ावा देना, जैसे कि अप्रत्यक्ष रूप से गर्माई या ठंडक पैदा करना, ऊर्जा प्रसारण और उपयोग में होने वाली बर्बादी को कम करना, गैरजरूरी मांग पर सीमा लगाना, ऊर्जा बचाने वाले पदार्थों को बढ़ावा देना।

इसके उदाहरणों में शामिल हैं : बिहार में धर्णाइ गांव का ग्रीनपीस इंडिया व सीड व अन्य गांवों मे बसिक्स द्वारा सौर माइक्रो-ग्रिड जैसे कई विकेन्द्रीकृत अक्षय ऊर्जा के कार्यक्रम (http://www.vikalpsangam.org/article/energy-empowerment-the-story-of-bijliand-dharnai/#.VgaQefntmko) और दक्षिण भारत में सेल्को द्वारा गरीब परिवार व छोटे उध्योगों को उर्जा मे स्वावलम्बित करने का काम (http://www.selco-india.com)।

विकल्पों में ऐसे कार्यक्रम शामिल नहीं किए जा सकते जो कीमती हों, संभ्रांतवादी तकनीकें और प्रक्रियाएं जिनका ज़्यादातर लोगों से कोई लेना-देना न हो; या ऐसे भी प्रयास जो विशाल-स्तरीय केन्द्रीकृत अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देते हों, जिन्हें निजि कारपोरेशनें खड़ा करती हैं और उनमें वे सभी समस्याएं मौजूद रहती हैं जो जीवाश्म-ईंधन आधारित ग्रिड प्रणाली में हैं, जो गरीब लोगों की पहुंच से बाहर हैं। यह मुद्दे वर्तमान सरकार द्वारा लागू की जा रही विशाल सौर-ऊर्जा परियोजनाओं के संदर्भ में बेहद चिंता का विषय बने हुए हैं।

धरणइ, बिहार मे ग्रीनपीस व सीड द्वारा स्थापित व स्थानीय लोगों द्वारा सम्भाली सौर उर्जा ग्रामवासियों को सतत बिजली देती है

ज्ञान और शिक्षा

इसमे शामिल हैं – ऐसे प्रयास जो बच्चों व अन्य लोगों को समग्र रूप से सीखने में मदद करते हैं, जिनकी जड़ें स्थानीय पारिस्थितिकी और संस्कृति में होते हुए भी वे अन्य जगहों से सीखने के लिए खुले होते हैं, जो न सिर्फ दिमाग पर, बलिक हाथों और दिल से सीखने पर भी ज़ोर देते हैं, जो जिज्ञासा और सवाल करने के साथ-साथ सामूहिक स्तर पर सोचने और काम करने को प्रोत्साहित करते हैं, विस्तृत सामूहिक और व्यक्तिगत क्षमताओं और रिश्तों को पुष्ट बनाते हैं, और औपचारिक व अनौपचारिक, पारंपरिक और आधुनिक, स्थानीय और वैश्विक के बीच सामंजस्य बनाते हैं।

भारत में इसके बहुत से उदाहरण हैं, यध्यपि वे आत्मा को मारने वाली और यथास्थिति बनाए रखने वाली मुख्धारा शिक्षा प्रणाली के सामने सूक्ष्म जान पड़ते हैं। इन उदाहरणों में शामिल है लदाख का सीख केन्द्र सेकमोल, जो खास स्कूल छोड देने वाले छात्रों के लिये है, और जो ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भर है (http://vikalpsangam.org/article/secmol/#.VgTg5Mvtmko); मध्य प्रदेश में आधारशिला, जहां बच्चे और कार्यकर्ता आपस में मिलकर पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं और पाठ्यक्रम मे स्थानीय ज्ञान पर आधारित गतिविधियां तथा बाहर से विचारों को शामिल किया गया है (http://www.vikalpsangam.org/article/the-school-on-the-hill/#.V6tfnmVkTSo); छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में इमली-महुआ जहां आदिवासी बच्चों के लिए पूरी तरह से स्वसंचलित तरीके से सीखने का माहौल है (http://www.vikalpsangam.org/static/media/uploads/Resources/imlee_mahuaa_learning2.pdf); कच्छ में कई शालाएं जहां संगीत, पारंपरिक वास्तुकला, कृषि व अन्य विषयों में सामुदायिक विशेषज्ञ युवाओं को ऐसे तरीके से सिखातें हैं जिससे पारंपरिक कौशल और ज्ञान भी आगे बढ़े और साथ ही वर्तमान आर्थिक व्यवस्था में उन्हें रोज़गार के साधन भी उपलब्ध हो सकें (उदाहरण के लिए, पारम्परिक व आधुनिक निर्माणकार्य सीखने के लिए कारीगरशाला, देखें https://issuu.com/hunnarshala/docs/newsletter-vol1)।

मणीबेली (महाराष्ट्र) मे नर्मदा बचाओ आन्दोलन द्वारा स्थापित वैकल्पिक शिक्षा वाली अनेक जीवनशाळाओं मे से एक

स्वास्थ्य और स्वच्छता

इसमे शामिल हैं – ऐसे प्रयास जो सर्वव्यापी अच्छे स्वास्थ्य और स्वास्थ्य देखभाल को सुनिश्चित करते हों, जो पोषक खाद्य सामग्री, पानी, स्वच्छता, व स्वस्थ रहने के अन्य तरीके सुनिश्चित करते हुए, बीमारी की रोकथाम पर ज़ोर देते हों, और जिन लोगों के पास पहले से रोगनिवारक/उपचार सेवाएं न रही हों वहां यह सेवाएं सुनिश्चित करते हों; विविध पारंपरिक और आधुनिक स्वास्थ्य प्रणालियों का समावेश करते हों, जो भारत और बाहर प्रचलित स्वदेशी और लोक चिकित्सा पद्धतियों, प्राकृतिक उपचार के तरीकों, आयुर्वेद, यूनानी व अन्य समग्रमापूर्ण या एकीकृत प्रणालियों का समावेश करते हों, और स्वास्थ्य सेवाओं तथा स्वच्छता में संचायती या लोकतान्त्रिक प्रबंधन व नियंत्रण को बढ़ावा देते हों।

स्वास्थ्य स्वर ग्रामवासियों और स्वास्थ्य कार्यकरताओं को जोडती है, सन्चार तकनीकी के रचनातमक उपयोग द्वारा

भारत में ऐसे प्रयासों के उदाहरण बढ़ रहे हैं, जिनमें शामिल हैं छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य स्वर जो मोबाइल तकनीकी व पारम्परिक चिकित्सा कि जोड से ग्रामीण स्वास्थ्य मुद्दों पर हल निकालती है (http://www.vikalpsangam.org/article/swasthya-swara-a-unique-community-healthsolution/#.V6tiv2VkTS); और तमिल नाडु के सितिलिंगी घाटी में आदिवासी स्वास्थ्य प्रयास के विभिन्न कार्यक्रम (http://www.tribalhealth.org)।

खाद्य सामग्री और जल

इसमे शामिल हैं – खाद्य सामग्री और जल की सुरक्षा और संप्रभुता की दिशा में किए जा रहे प्रयास, जो सुरक्षित व पोषक खाद्य सामग्री के उत्पादन और उस तक लोगों की पहुंच सुनिश्चित करते हों, भारतीय पाककला की विविधता को बनाए रखते हों, खाद्य उत्पादन और वितरण प्रक्रियाओं और बिना खेती किए प्राप्त की जाने वाली खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने वाली संचायती ज़मीनों पर सामुदायिक नियंत्रण सुनिश्चित करते हों, खेती न किए जाने वाली और 'जंगली' खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देते हों, जल के संभारण, उपयोग और वितरण को विकेन्द्रीकृत करने में मदद करते हों, पारिस्थितिकीय रूप से सतत, कुशल व तुल्य, उत्पादक–ग्राहक कड़ियों को मज़बूत करते हों, जल को संचायती संसाधन बनाए रखने की वकालत करते हों, और जल तथा जल–क्षेत्रों के प्रशासन में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को बढ़ावा देते हों।

भारत में इसके अनगिनत उदाहरण हैं : डैक्कन डेवलपमेन्ट सोसायटी और टिम्बक्टू कलेक्टिव के बारे में ऊपर लिखा गया है; पुणे और उसके आसपास के इलाकों में सामुदायिक सहयोग कृषि के गोरस संगठन द्वारा पहल http://vikalpsangam.org/article/placing-faith-in-the-farmer/#.VhYMxvntmko); ग्रामीण और शहरी भारत में सैंकड़ों स्थानीय जल संचयन प्रयास (जैसे कच्छ में सहजीवन, ए.सी.टी. व अन्य संस्थाओं द्वारा, देखें http://www.kalpavriksh.org/images/alternatives/CaseStudies/KachchhAlternativesReport.pdf Am¡a http://act-india.org)। इंडिया वाटर पार्टल पर कइ ऐसे उदाहरण दर्शाये गये हैं (http://www.indiawaterportal.org)

संभ्रांतवादी भोजन संबंधी सनक पालना, चाहे वह स्वास्थ्यवर्धक या जैविक खाद्य सामग्री से ही क्यों न जुड़ी हो जैसे आजकल गाय के नाम पर हो रहा है, और महंगे तकनीकी जल समाधान जिनसे ज़्यादातर लोगों का कोई लेना–देना न हो, को विकल्पों की श्रेणी में शामिल नहीं किया जा सकता।

भारत के सबसे सूखे इलाके कच्छ मे विकेन्द्रित पानी सम्वर्धन व सामाजिक प्रबन्धन का उदाहरण

वैश्विक संबंध

इसमे शामिल हैं – इस रूपरेखा के अनुसार, सरकार या नागरिकों के ऐसे प्रयास जो, ''वर्तमान समय में भू–राजनीतिक शत्रुताओं के आधार पर बनते हुए युद्ध स्तरीय, अति–प्रतिस्पर्धात्मक अंतर्राष्ट्रीय संबंध बनाने के तरीकों के विकल्प उपलब्ध कराते हैं; नागरिकों और राजदूतों के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रों के बीच विमर्श; सेना, चौकसी और पुलिस पर होने वाले खर्चों को बढ़ाने पर पाबंदियां; 'क्षति' पहुंचाने वाले व्यापार पर प्रतिबंध (जैसे कि शस्त्र, ज़हरीले कैमिकल, अपशिष्ट); और यहां तक कि 'राष्ट्र–राज्य' की अवधारणाओं को भी दोबारा परखना तथा विश्व के समुदायों के बीच संबंधों पर ज़ोर देना।

इसके उदाहरणों में शामिल है भारत और पाकिस्तान के बीच लोक–संवाद के कइ प्रयास, और अशस्त्रीकरण, गैर–सरेखण, पर्यावरणीय सततता, व अन्य ऐसी नीतियों पर भारत व भारतीय संगठनो द्वारा वकालत।

इनमें जिसे विकल्प नहीं माना जा सकता वह है भारत व अन्य उभरती हुई मज़बूत अर्थव्यवस्थाओं (ब्रिक्स देशों) द्वारा संयुक्त अमरीकी राष्ट्र और यूरोप की शक्तियों के विरुद्ध विकल्प खड़ा करने के प्रयास, क्योंकि ऐसे करने में वे भी उन्हीं नव–उदारवादी, राज्य–कॉरपोरेट प्रभुत्व बनाए रखने वाली नीतियों का पालन करते हैं, जो औद्योगिक देशों ने लागू की थीं (बांड व गार्सिया २०१५)। यह रास्ते हमे न्याय व पर्यावरणीय सततता की ओर नही ले जा सकते।

तमिल नाडु विकल्प सन्गम, मदुराइ, फरवरी २०१५

उरमुल का बिकानेर (राजस्थान) के पास महिला हस्तकलाकार के साथ आत्म-सम्मान व आजीविका सशक्तिकरण का काम

विकल्पों में किन सिद्धांतों की अभिव्यक्ति होती है?

इस रूपरेखा का एक अहम हिस्सा वे सिद्धांत हैं, जो ऊपर दिए गए कई विकल्पों का आधार हैं या उनके बारे में विभिन्न संगमों में बात की गई है। यह इस तथ्य को स्वीकारते हैं कि इस प्रकार के प्रयासों में व्यापक विविधता होती है, और इनमें से किसी भी विकल्प को हूबहू उसी स्वरूप में किसी अन्य जगह पर लागू नहीं किया जा सकता क्योंकि स्थानीय परिस्थितियों में बहुत सी विविधताएं होती हैं। लेकिन इन विकल्पों के आधारभूत सिद्धांतों से सीख लेने से किसी अन्य जगह के लिए इस प्रकार के विकल्प बनाने में मदद मिल सकती है।

रूपरेखा में कहा गया है कि यह सिद्धांत खुद भी ''मूलभूत मानवीय नैतिक मूल्यों पर आधारित हैं, जिनके आधार पर निम्नलिखित सिद्धांत उभरे हैं, जिनमें शामिल है करुणा, सहानुभूति, सच्चाई और सत्यवादिता, सहिष्णुता, उदारता और देख-रेख। यह ज़्यादातर आध्यात्मिक परंपराओं और धर्म-निरपेक्ष नैतिकताओं द्वारा अनुमोदित किए जाते हैं, और यह नीचे दी गई सिद्धांतों की चर्चा में केन्द्रीय रखने के लायक हैं।''

रूपरेखा में निम्नलिखित सिद्धांत दिए गए हैं (जिनकी व्याख्या या विवरण उसमे निहित हैं):

भागलपुर (बिहार) के पास विलुप्त होते गरुड (ग्रेटर एड्जुटन्ट स्टोर्क) को सामुदायिक संरक्षण मिला है, मंदर नेचर क्लब की सहायता से

- पारिस्थितिकीय अखंडता और प्रकृति के अधिकार
- तुल्यता, न्याय, और समावेशता
- स्वराज व स्वशासन
- यथार्थपूर्ण भागीदारी का अधिकार और उसके प्रति जिम्मेदारी
- विविधता और बहुलवाद
- सामूहिकता व एकजुटता, और उनके अनुकूल व्यक्तिगत स्वतंत्रता
- लचीलापन और अनुकूलनशीलता
- सहायकता, आत्म-निर्भरता, स्वावलम्बन और पर्यावरण-क्षेत्रीयता
- सादगी और पर्याप्तता (अपरिग्रह)
- श्रम और कार्य में गरिमा और रचनात्मकता
- अहिंसा, सद्भाव और शांति
- उत्पादन और खपत में दक्षता (ऊर्जा और संसाधनों के उपयोग के संदर्भ में)
- नैतिक या आध्यात्मिक द्रिष्टीकोण

ऐसे वैकल्पिक भविष्य की ओर हमें क्या रणनीतियां अपनानी होंगी?

रूपरेखा में कई रणनीतियां और गतिविधियां दी गई हैं, जो कि ऊपर दिए गए प्रमुख स्तंभों और सिद्धांतों पर आधारित विश्व बनाने में मदद कर सकती हैं। जिस प्रकार की नेटवर्किंग और जुड़ाव बनाने, और इन सिद्धांतों पर नवाचारों को बढ़ावा देने का ये विकल्प संगम प्रयास कर रहे हैं, उसे और आगे ले जाने की ज़रूरत है। लेकिन साथ ही, संगमों में भाग लेने वाले सभी लोगों ने ''असततता, अतुल्यता और अन्याय की शक्तियों के प्रति विरोध, नागरिक अवज्ञा, और असहयोग (सामूहिक और व्यक्तिगत, दोनों स्तरों पर), और मानसिकताओं, दृष्टिकोण और संस्थानों के निराकरण'' की आवश्यकता को स्वीकारा है। इसके साथ हैं वे गतिविधियां जो पिछले समय में निजिकृत या सरकारी नीति से 'बंद' कर दी गई जगह (जैसे संरक्षित क्षेत्र) को फिर से सामुहिक प्रबन्ध की ओर बनाने में मदद करेंगी, जो दलितों, आदिवासियों, महिलाओं, भूमिहीनों, विकलांगता के साथ जी रहे लोगों, अल्पसंख्यकों, घुमंतु समुदायों, 'निरूपित' जनजातियों, कामगारों, और अन्य हाशिए के समुदायों की आवाज़ बढ़ाने में सहायक होंगी। जेन्डर और यौनिकता के मुद्दों पर काम करने वाले सहभागियों ने ऐसे लोगों का पर्दाफाश (जवाबी रूप से शर्मसार करने) की रणनीति पर ज़ोर दिया जो जेन्डर, यौनिक प्रवृत्ति, और अन्य रूढ़िवादी पूर्वाग्रहों और पक्षपातों का प्रदर्शन करते हैं; अन्य लोगों ने अहिंसक संचार और झगड़ों के निपटारे की ज़रूरत पर ज़ोर दिया, और विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के लोगों के लिए ऐसे मंच बनाने पर जहां वे एक-दूसरे को समझ कर उनके साथ मेल-मिलाप कर सकें, जिसमें आध्यात्मिक और नैतिक प्रक्रियाएं भी शामिल हों। इस और अन्य माध्यमों से, अपने व्यक्तिगत वर्ताव का खुद जिम्मेदारी लेना, और साथ ही ज्ञान, अनुभवों, संसाधनों और कुशलताओं को एक-दूसरे से बांटना (जिसमें यह सिर्फ पैसे के लेनदेन पर आधारित न हो!), और निरंतर वार्तालाप करने को इस रूपरेखा में शामिल किया गया है।

जिन अन्य रणनीतियों को महत्वपूर्ण बताया गया है, वे हैं राजनीतिक पार्टियों और उनके बिना भी राजनैतिक तत्वों से संपर्क बनाना, और निवारण तथा बदलाव के लिए उपलब्ध लोकतांत्रिक तरीकों का उपयोग करते हुए ऐसी और ज़्यादा जगहें बनाने पर ज़ोर देना। खासकर शहरों में सामाजिक और पारिस्थितिकीय रूप से जिम्मेदार तरीके से उपभोग करने की प्रक्रियाएं अपनाने के प्रति जागरूकता और विकल्प उपलब्ध कराने के विषय में भी रूपरेखा में कहा गया है। जागरूकता पैदा करने और विरोध तथा बदलाव को बढ़ावा देने के लिए मुख्यधारा और वैकल्पिक मीडिया तथा कलाओं के उपयोग को भी महत्वपूर्ण माना गया है। लेकिन कला और शिल्प केवल एक उपकरण की तरह उपयोग करने के लिए ही नहीं हैं; ज़रूरी है कि इन्हें ''रोज़मर्रा के जीवन में शामिल किया जाए, जिसके अंतर्गत हर व्यक्ति और समूह की रचनात्मकता को बढ़ावा मिले, और काम तथा आनंद को एक-दूसरे के करीब लाया जा सके।''

संगम की प्रक्रिया में इस सवाल पर एक दिलचस्प चर्चा रही है कि हमें अपनी खोज को किस 'विचारधारा' पर आधारित करना चाहिए? इस पर उभरती हुई सामूहिक सोच बनी है कि ''शास्त्रीय और लोक परंपराओं, दोनों से सीखना ज़रूरी है, और मानवीय परंपराओं से भी (अंतत: उनके बीच के विरोधाभास को हटा दिया जाए); प्रमुख सिद्धांतकारों और विचारकों (गांधी, मार्क्स, फुले, अम्बेडकर, औरोबिन्दो, टैगोर... आदि), नारीवादियों, पर्यावरणविदों, और आदिवासी/स्वदेशी/ जानजातीय/ दलित वैश्विक नज़रियों'', और इस प्रक्रिया में ''विश्व भर के विभिन्न लोगों और सभ्यताओं के बीच आपसी सीख'' भी शामिल की जानी चाहिए।''

भिमाशंकर अभ्यारण्य मे आदिवासी समुदाय के कल्पवृक्ष की मदद से वन हक, आजीविका, व भविष्य के आयोजन का काम

हालांकि रूपरेखा में ऐसी रणनीतियों और गतिविधियों की काफी नीरस सी सूचि दी गई है, लेकिन यह इस ज्ञान पर आधारित है कि भारत में कहीं-न-कहीं, इनको लागू किया जा रहा है या इन पर खोज की जा रही है। यह स्पष्ट है कि ये अभी भी मुख्यधारा के मुकाबले हाशिए पर हैं, लेकिन उनका मौजूद होना भर ही अपने आप में महत्वपूर्ण है, इस बात का सूचक है कि व्यापक स्तर पर क्या संभावनाएं हैं।

◈◈

क्या इस सब को मिलाकर एक समग्र वैकल्पिक विश्वदृष्टि बन सकती है?

अंत में, रूपरेखा में कुछ प्रश्नों की सूचि दी गई है जो खोज, चर्चा, और समाधान को आगे ले जाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। यदि वैकल्पिक प्रक्रियाओं और अवधारणाओं की नेटवर्किंग से हमें समग्र वैकल्पिक विश्वदृष्टि का विकास करना है, तो यह प्रक्रिया करना ज़रूरी है। यह प्रश्न हैं :

- ''हम कितनी मज़बूती से समुदाय/समूह को शक्ति का आधारभूत ढांचा बना सकते हैं, बजाए इसके कि वह शक्ति राज्य या कॉरपोरेशन में निहित हो?
- प्राचीन प्रथाएं और अवधारणाएं वर्तमान समय में किस हद तक प्रासंगिक हैं; जिन्हें अक्सर सांप्रदायिक/पूंजिवादी/कॉरपोरेट/पित्रसत्तावादी ताकतें हथिया लेती हैं, उन्हें इस प्रकार के दुरुपयोग से कैसे बचा सकते हैं कि वे सब के मुद्दे शामिल कर सकें?
- हम उस विश्वदृष्टि से कैसे सीख सकते हैं जो अक्सर हावी सोच के नीचे दबी रह जाती है, जैसे कि, नारीवाद?
- हम इस सब को आज के भारत के लिए प्रासंगिक कैसे बना सकते हैं, खासकर युवाओं के लिए, जहां हम लोगों की सकारात्मक संदेश देखने की ज़रूरत को आधार बना पाएं?
- यह मुद्दे व्यापक स्तर पर लोगों (जिनकी मानसिकता अभी नहीं बदली है) तक कैसे पहुंच सकते हैं, कौन सी भाषा और संचार के माध्यम ज़्यादा प्रभावी हो सकते हैं? संदेशों में तर्क और भावनाओं का सम्मिश्रण कैसे किया जाए?
- जो लोग, जिसमें मध्यम वर्ग के लोग शामिल हैं, वर्तमान में हावी प्रणालियों में फंसे हैं उनके लिए किस प्रकार का बदलाव काम करेगा; इसके विपरीत, यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि जो पहले से सतत जीवन जी रहे हैं, उन्हें जारी रखने और बढ़ाने के लिए सशक्त किया जाए?
- बदलाव के लिए प्रमुख राजनीतिक वाहक कौन होंगे? जो आंदोलन वर्तमान हावी प्रणालियों का विरोध कर रहे हैं, उन्हें और वैकल्पिक भविष्य बनाने की गतिविधिओं को कैसे जोड़ा जाए?
- भारत में विकल्पों की दिशा में काम कर रहे बिखरे हुए, विखंडित, विविध संघर्षों को सांझे मुद्दों और द्रिष्टीकोणों के तहत् एकजुट कैसे किया जाए? यह राजनीतिक बदलाव के लिए ज़ोरदार समन्वय कैसे बन सकता है?
- निजि संपत्ति के विषय पर क्या हम एकमत हैं?''

अंततः संगत के सहभागियों ने अपने आप से यह प्रश्न पूछा : ''हम अपने व्यक्तिगत या संस्थागत स्तरों पर किस हद तक इन मूल्यों को जी पा रहे हैं? क्या हमारा और हमारी संस्थाओं का काम एकजुटता, एकता पर आधारित है... क्या हमारे काम को जारी रखने के लिये वैकल्पिक आर्थिक विकल्प हैं?''

◈◈

टिम्बक्टू मे आन्ध्र प्रदेश व तेलनाना विकल्प सन्गम, अक्टुबर २०१४

बीज बचाओ आन्दोलन द्वारा उत्तराखंड के पारम्परिक फसल विविधता के संरक्षण का काम

निष्कर्ष

विकल्प संगम प्रक्रिया के दीर्घकालीन उद्देश्यों में से एक है, लोगों की एक ऐसी राजनीतिक शक्ति तैयार करना जो व्यापक बदलाव लाने में प्रभावी हो। अभी यह कहना मुमकिन नहीं है कि यह प्रक्रिया इस दिशा में बढ़ रही है या नहीं। ऊपर चर्चित रूपरेखा भारत के लिए एक वैकल्पिक, जमीनी स्तर से उभरने वाली दृग्दृष्टि का एक आधार हो सकती है; लेकिन इसके लिए और अधिक मंथन और विमर्श की आवश्कता है, और प्रयास के हर कार्यक्षेत्र में लोगों का एजेन्डा तय करने के लिए और अधिक काम करने की ज़रूरत है। उदाहरण के लिए, ऊर्जा विकल्प संगम की अनुवर्ती कार्यवाही के रूप में यह चर्चा चली है कि क्या हम भारत के लिए वैकल्पिक ऊर्जा का नागरिक मार्गचित्रण तैयार कर सकते हैं, जो कि जीवाश्म-ईंधन पर आधारित सरकारी योजना का विकल्प हो, जो भविष्य के लिए नीतियों का मार्गदर्शन कर सके, और जो जन समूह के मलिन ऊर्जा के खिलाफ आन्दोलन व स्वच्छ, विकेन्द्रित ऊर्जा स्रोत के प्रयासों को भी एक समग्र संदर्भ दे सके। ऐसे ही प्रयास खाद्य पदार्थों, ज्ञान व शिक्षा, युवाओं, कलाओं, शहरों, व उन दूसरे विषयों पर किए जा सकते हैं, जिनपर संगम आयोजित किए जा रहे हैं। इस प्रकार के अन्य नेटवर्कों और मंचों (जैसे कि लेखकों, शिक्षाविदों, कामगार समूहों, प्रतिरोध आंदोलनों) के साथ मिलकर, जिसे एक बातचीत में गणेश देवी ने 'संगमों का संगम' नाम दिया था, यह एक शक्तिशाली नया आंदोलन बन सकता है जो कि, आज के दिन अंधेरी प्रतीत होने वाली सुरंग के अंत में, भारत, और विश्व के लिए आशा की एक किरण बन जाए।[६]

बोध गया (बिहार) मे उर्जा (बिजली) विकल्प सन्गम मे भाग लेते हुए उर्जा नीति तथा जमीनी स्तर कार्यरत संगठन (मार्च २०१६)

उद्धरण

Bond 2015, Patrick and Garcia, Ana (eds). 2015. BRICS: An anti-capitalist critique. Jacana Media, Johannesburg.

Daga, Shweta. 2014. All the way to Timbaktu. Anveshan, 28 October, http://projectanveshan.com/timbuktu/

Desor, S. 2014. Strengthening Local Livelihoods with Ecological Considerations in Kachchh, Gujarat. Kalpavriksh, Pune, Maharashtra. http://www.vikalpsangam.org/static/media/uploads/Resources/kachchh_alternatives_report_titled.pdf

Hasnat, Syed M. 2005. Arvari Sansad: the farmers' parliament, LEISA Magazine, December.

Kalpavriksh. 2015. Vikalp Sangam: In search of alternatives, Poster exhibition available in book form, https://drive.google.com/file/d/0B-fW5lp3Tj9YMTg0NkdHcTVyZms/view?pref=2&pli=1.

Kothari, A. 2014. Radical Ecological Democracy: A path forward for India and beyond, Development, 57(1), 36–45, http://www.palgrave-journals.com/development/journal/v57/n1/full/dev201443a.html.

Kothari, A. 2015. Confluence of hope: Converging for a better world, India Together, 11 March, http://indiatogether.org/vikalp-sangam-champions-of-alternative-sustainable-development-op-ed

Nagendra, Harini. 2016. Restoration of Kaikondrahalli Lake in Bangalore: Forging a New Urban Commons. Kalpavriksh, Pune, Maharashtra. http://www.vikalpsangam.org/static/media/uploads/Resources/kaikondrahalli_lake_casestudy_harini.pdf

Pathak, N. and Gour-Broome, V. 2001. Tribal Self-Rule and Natural Resource Management: Community based conservation at Mendha-Lekha, Maharashtra, India. Kalpavriksh, Pune and International Institute of Environment and Development, London.

Thekaekara, Mari Marcel. 2015. What an idea! The Hindu Sunday Magazine, 28 March, http://www.vikalpsangam.org/article/what-an-idea/

---

१. वर्ष २०१७ के मध्य तक जो क्षेत्रीय संगम आयोजित किए गए वे हैं : आंध्र प्रदेश और तेलंगाना, टिम्बक्टू में, अक्तूबर २०१४; तमिल नाडू के लिए मदुरई में, फरवरी २०१५; लद्दाख के लिए लेह में, जुलाई २०१५; महाराष्ट्र के लिए वरधा में, अक्तूबर २०१५; कच्छ के लिए भुज में, जुलाई २०१६; पश्चिमी हिमालय के लिए संभावना (हिमाचल) मे, अगस्त २०१६; केरल के लिए बोधीग्राम मे, अप्रैल २०१७ और मध्य प्रदेश के लिए ओर्छा मे, सितमबर २०१७। इसके अतिरिक्त, ऊर्जा पर एक विषय–आधारित संगम बोधगया मे फरवरी २०१६; खाद्य पदार्थो पर नियमगिरी (उडीशा) मे, सितंबर २०१६; व युवाओं पर भोपाल मे, फरवरी २०१७।

२. यह रूपरेखा पहली बार वर्ष २०१४ में तैयार की गई थी जिससे कि संगम प्रक्रिया में चर्चाओं को प्रोत्साहित किया जा सके। इस लेख में जिस प्रारूप को आधार बनाया गया है, वह पहले चार विकल्प संगमों (टिमबक्टु, मदुरई, लद्दाख और वर्धा) में प्रस्तुत किए गए प्रारूपों पर प्राप्त टिप्पणियों, विकल्प संगम कोर समूह बैठक (दिसंबर २०१५), और मौखिक रूप से या ईमेल पर प्राप्त अन्य टिप्पणियों को शामिल करके तैयार किया गया प्रारूप है। संपूर्ण वर्तमान रूपरेखा (पांचवा अवतार) के लिए देखें http://www.vikalpsangam.org/about/the-search-for-alternatives-key-aspects-and-principles/ .

३. इससे पहले इन्हें वैकल्पिक भविष्य के स्तंभों के रूप में वर्णित किया गया था, देखें कोठारी २०१४।

४. यहां पर संस्कृति का मतलब है जीने और जानने के तरीके, जिसमें भाषा, रीति–रिवाज़, कायदे, नैतिकता और मूल्य, विश्वदृष्टि, जीवन शैलियां, प्रकृति के साथ जुड़ाव, और ज्ञान शामिल है।

५. यह अंश www.vikalpsangam.org वैबसाइट के लिए उपयेाग किए गए व्यापक मार्गदर्शन से अनुकूलित किया गया है। इसमें अन्य कार्यक्षेत्र और पहलू जोड़े जा सकते हैं।

६. २०१७ मे सन्गमो के सन्गम नाम की प्रक्रिया शुरु हुइ है, जिसमे देशभर के लगभग १०० नेटवर्क व मंच को शामिल करने की आशा है।

Gallery

लदाख मे वैकल्पिक शिक्षा और सीख मे कार्यरत सेकमोल, जो केवल सौर उर्जा पर चलती है

कच्छ मे साइयारेन सामुदायिक रेडियो २५ गांव को खबर, गीत, टिपणी, व चर्चा पहुंचाती है

समुदाय व स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा जन–जागरूकता व बदलाव लाने के उद्देशय से बनाइ मालधारी समुदायों पर प्रदर्शनी, लिविन्ग लाइट्ली

Gallery

लदाख विकल्प सन्गम मे लेडो गांव के महिला जुट द्वारा स्थानीय जैविक विवधता से बनाया गया पारम्परिक भोजन, जुलाइ २०१५

स्थानीय नागरिक द्वारा पुनर्जीवित बन्गलूरु की काइकोन्द्रहल्ली झील, जनता के इस्तमाल व जंगली जीव के वास के लिये

भीमाशंकर अभ्यारण्य मे महिला स्वसहायक समिति द्वारा जंगल उपादन की प्रदर्शनी, कल्पव्रक्ष की सहायता से आयोजित

Gallery

सम्भावना (हिमाचल प्रदेश) मे पश्चिम हिमालाय विकल्प सन्नाम मे शामिल लोग, अगस्त २०१६

युवा विकल्प सन्नाम के भागिदार, भोपाल, फरवरी २०१७

महाराष्ट्र विकल्प सन्नाम मे भागिदार लोगों को आनंद निकेतन के छात्र मिट्टी के पदार्थ बनाने की सीख देते हुए

भारत व दुनिया के बाकी हिस्सो मे, ऐसे हजारों प्रयोग हैं जो मनुष्य की जरूरतें व आकांक्षाओं को बिना परयावरण के विनाश तथा बिना असमानताओं को बढाए पूरी कर रहे हैं। क्या इनपर आधारित वैकल्पक पद्धति व द्रिष्टीकोण की सामूहिक खोज हो सकती है? ऐसे द्रिष्टीकोण पारम्परिक व नये विचार व संस्क्रिति तथा पुरानी गतिविधियां और नये प्रयोगों को आगे कैसे ले जा सकते हैं? क्या ये मूलभूत चुनौति दे सकते हैं, उस वर्तमान मे हावी आर्थिक व राजनैतिक तन्त्र को, जिनकी वजह दुनिया पर्यावरणीय विनाश के व सामाजिक-आर्थिक (जिनमे लिंग और जातिवाद शामिल है) असमानताओं से उतपन्न सभ्यता के विनाश के कगार पर खडी है? एस स्थिति मे क्या वे आशा की किरण बन सकते हैं?

यह पुस्तिका कुछ ऐसी प्रक्रिया पर विचार रखती है, चर्चा व द्रिष्टी को बढाने के उद्देश्य से। यह विकल्प सन्गम नामक प्रक्रिया पर आधारित है। यह एक अनौपचारिक मंच है, जो देशभर के ऐसे संगठन व व्यक्ति जो वैकल्पिक समाज की ओर प्रयास कर रहे हैं, को जोडता है (देखें, www.vikalpsangam.org)। लेख मे शामिल है: विकल्प किसे कहा जा सकता है, अलग-अलग सत्रों मे यह कैसे दिखता है, इनमे मुख्य सिद्धांत व मूल्य क्या उभर रहे हैं, और वैकल्पक समाज की ओर बढने के लिये क्या कदम उठाये जा सकते हैं। इन सब मुददों को दर्शाने के लिये भारत मे जमीनी स्तर पर हो रही कइ गतिविधियों के उदाहरण दिये गये हैं।